आतंकवाद से ग्रस्त मानवता

मुख्त्यार अली

आज आतंकवाद से संपूर्ण मानवता ग्रस्त है क्योंकि इसने एक महामारी का रूप धारण कर लिया है। 11 सितंबर, 2001 को जो आतंकवादी हमला हुआ उससे मानवता कांप उठी है। इस घटना ने उन राष्ट्रों की नींद हराम कर दी है जो पहले होने वाली आतंकवादी गतिविधियों को न केवल मूक दर्शक की भांति देख रहे थे अपितु आतंकवादियों को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहायता भी कर रहे थे। भारत जैसे पीड़ित राष्ट्र आतंकवाद के विरुद्ध आवाज उठाते थे तब ये शक्तिशाली राष्ट्र कुंभकर्णीय नींद में थे और आतंकवाद के विरुद्ध उठने वाली बुलंद आवाज को नजरअंदाज कर देते थे। यद्यपि अनेक अंतर्राष्ट्रीय रंगमंचों पर आतंकवाद विरोधी मुहिम छेड़ी गई परंतु यह ज्यादा असरदार साबित नहीं हुई।

आज जब आतंकवाद के कारनामों का पहाड़ अमरीका पर टूट पड़ा है तब गहरी नींद में सोया हुआ विश्व भड़ककर जागा है और युद्ध व प्रतिहिंसा रूपी दीप लेकर उस रास्ते की तलाश में भटक रहा है जो उसके आतंकवाद मुक्त सपने को साकार कर सके।

आतंकवादियों ने अमरीकी विमानों का अपहरण कर, उनके माध्यम से मुक्त विश्व के प्रतीक विश्व व्यापार केंद्र तथा अमरीकी सुरक्षा का प्रतीक पेंटागन की विशालकाय इमारतों को ताश के पत्तों की तरह धराशायी किया है जिससे अमरीका समाज में

त्राहि-त्राहि मच गई। हमले के इतने दिनों के बाद भी वे अपने आपको इस घटना से उबार नहीं पाए हैं। हर व्यक्ति के दिल में दहशत और खौफ दस्तक दे रही है, जो उनके जीवन व अमरीकी इतिहास की पहली दिल दहलाने वाली घटना थी।

अमरीकीवासियों के लिए तो यह पहली घटना थी परंतु भारत सहित दुनिया के अनेक देश आतंक के तांडव नृत्य को कई दशकों से देख रहे हैं और लाखों बेगुनाह लोग आतंकवाद के शिकार बन चुके हैं। भारत सरकार के गृह मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार जम्मू-कश्मीर में लगभग 55 हजार लोगों का खून बह चुका है। यह मानवता का दुर्भाग्य ही है कि कुछ राष्ट्र अपने यहां आतंकवाद रूपी नाग को न केवल संरक्षण दे रहे हैं, बल्कि इन्हें हर प्रकार की सहायता जैसे प्रशिक्षण, धन, सूचना सैन्य आदि उपलब्ध करवा रहे हैं।

अमरीका न्यूयार्क और वाशिंगटन में हुए ताजा हमलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी ओसामा बिन लादेन को दोषी ठहरा रहा है परंतु अमरीका को भी यह नहीं भूलना चाहिए कि वह स्वयं दुध का धुला हुआ नहीं है, वह आज जिस ओसामा बिन लादेन की बात कर रहा है, वह उसी की उपज है जिसे अमरीका ने अफगानिस्तान पर सोवियत हस्तक्षेप (1979) के समय ढाल के रूप में इस्तेमाल किया था। उस समय लादेन जो कुछ अमरीकी हितार्थ कर रहा था, चाहे उसका स्तर कैसा भी क्यों न हो—क्या तब वह आतंकवादी नहीं था? आज तक उसने दुनिया की एक मात्र महाशक्ति अमरीका को ललकारा है तो अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी करार दे दिया गया और विश्व के अन्य राष्ट्र भी अमरीका जमात के पीछे खड़े हो गए हैं।

आज हम जिस अमरीका को आतंकवाद विरुद्ध मुहिम के नेता के रूप में देख रहे हैं, उसी अमरीका ने द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से लेकर आज तक ऐसे अनेक कारनामे किए हैं जो आतंकवादियों के कृत्यों से कम नहीं हैं। जिन देशों के खिलाफ युद्ध एवं बमबारी की है उनमें प्रमुख इस प्रकार हैं—चीन (1945-46, 1950-53), कोरिया (1950-53), ग्वाटेमाला (1954), इंडोनेशिया (1958), क्यूबा (1959-60), पेरू (1965), लाओस (1964-73), वियतनाम (1961-73), कम्बोडिया (1960-70), ग्रेनाडा (1983), लीबिया (1986), अल्सलवाडोर (1980), पनामा (1989), इराक (1991-आज तक), बोस्निया (1995), सूडान (1998), यूगोस्लाविया (1999) और अब अफगानिस्तान। इनके अलावा अमरीका ने तख्ता पलट, राजनीतिक हत्याएं, विरोधियों को संरक्षण, राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप जैसे अमान्य कार्य कर राष्ट्रों की संप्रभुता का हनन करने का भी प्रयास किया है। इन्हें भी आतंक एवं विध्वंसकारिता की श्रेणी से अलग रखना बेमानी होगी।

7 अक्टूबर, 2001 से अमरीका ने कथित अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी ओसामा बिन लादेन को सबक सिखाने और उसे जिंदा या मुर्दा पकड़ने के लिए अफगानिस्तान पर सैन्य कार्यवाही शुरू की है ताकि विश्व से आतंकवाद को नेस्तनाबुद किया जा सके। इसके लिए अमरीका विश्व समुदाय से सहयोग की अपील कर रहा है परंतु मैं अमरीकी राष्ट्रपति बुश और अन्य राष्ट्रों के शासकों से यह प्रश्न पूछना चाहता हूं कि क्या हिंसा की प्रतिहिंसा से आतंकवाद को समाप्त किया जा सकता है? मेरे विचार में यह पूर्णतया असंभव है। इस बात का इतिहास गवाह है कि किसी भी समस्या का स्थाई समाधान आपसी बातचीत व सौहार्दपूर्ण वातावरण से हुआ है न कि हिंसा से।

अमरीका की इस सैन्य कार्यवाही से बड़ी संख्या में बेकसूर अफगानी मारे जा रहे हैं। क्या यह आतंकवाद से कम है? अमरीका को चाहिए कि वह धैर्य से काम ले और ऐसी कार्यवाही न करे जिसके शिकार मासूम लोग होते हों। ऐसा होना मानवता के घाव पर नमक छिड़कने के समान है जिसने पहले ही आतंकवाद के नाम पर लाखों लोगों की बलि दे चुकी है और अब रक्तपात को वह किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेगी।

आज आतंकवाद को धर्म के साथ जोड़कर अलग-अलग रूपों में देखा जा रहा है। जहां एक ओर आतंकवाद-विरुद्ध लड़ाई को दो धर्मों (इस्लाम बनाम ईसाई) की संज्ञा दी जा रही है। कुछ कट्टरपंथी तत्व इसको जेहाद की संज्ञा देकर भोली-भाली जनता की भावना से खेल रहे हैं। भला इंसानियत में विश्वास करने वाला धर्म के इस झमेले में क्यों पड़ेगा जिसे दो वक्त की रोटी की चिंता रहती है? वहीं दूसरी ओर एक धर्म विशेष के लोगों

को संदेहास्पद एवं क्रूर भाव से देखा जा रहा है। असामाजिक तत्व ऐसा वातावरण बनाकर उस धर्म विशेष को बदनाम करने का षड्यंत्र रच रहे हैं और इसके आधार पर अपनी स्वार्थों की रोटी सेक रहे हैं। इसे रोकना ही होगा। यह जो न केवल अनुचित है अपितु तर्क एवं विवेक रहित है। यहां मैं यह कहना उचित समझूंगा कि आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता।

विश्व के नेताओं को चाहिए कि वे शांति के दीप को लेकर उन समस्याओं का समाधान करें जिनकी बदौलत आतंकवाद महामारी का रूप लिए हुए है। अंत में मैं यह पंक्तियां उद्धृत करूंगा कि—

मैंने अपनी आत्मा को देखना चाहा
उसे मैं देख न सका
मैंने अपने ईश्वर को देखना चाहा
पर ईश्वर भी नजर नहीं आया
मैंने अपने भाई को देखना चाहा
और मैं तीनों को पा गया।
आत्मा, ईश्वर और बंधु।

इस प्रकार यदि विश्व समुदाय एक-दूसरे की समस्या (आतंकवाद) को अपनी समस्या मानेगा तो निश्चित तौर पर आतंकवाद को हमेशा-हमेशा के लिए कब्र में दफना दिया जाएगा और आतंकवाद मुक्त समाज का सपना आज जो हम संजोए हुए है वह साकार रूप ले सकेगा।